राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में वैदिक कालीन शिक्षा की प्रासंगिकता का समालोचनात्मक अध्ययन

आई०आई०एम०टी० विश्वविद्यालय मेरठ (उत्तर प्रदेश)
शिक्षा संकाय के अन्तर्गत
शिक्षाशास्त्र में पीएचडी0 उपाधि हेतु

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की रूपरेखा

शोध निर्देशिका:
डॉ० शैली
एसेसिएट प्रोफेसर
एम०ए० (अर्थशास्त्र, अंग्रेजी)
एम०एड०, नेट, पी–एच०डी० (शिक्षाशास्त्र)

शोधकर्त्ती :
मंजीता त्यागी
नामांकन सं० **IIMTU1967134**

शोध केन्द्र
कॉलेज ऑफ एजुकेशन
गंगानगर, मवाना रोड, मेरठ (उत्तर प्रदेश)

2021

''राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में वैदिक कालीन शिक्षा की प्रासांगिकता का समालोचनात्मक अध्ययन''

प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी समाज की उन्नति और विकास का आधार होती है, और इसका स्वरूप समय के साथ बदलता रहता है। भारत में शिक्षा की एक अत्यंत समृद्ध और प्राचीन परंपरा है, जिसकी जड़ें वैदिक काल में गहरी जमी हुई हैं। वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली, जो गुरुकुलों और आश्रमों पर आधारित थी, सिर्फ ज्ञान प्राप्त करने तक सीमित नहीं थी। इसमें छात्रों के सर्वांगीण विकास, नैतिक मूल्यों के आत्मसातीकरण और समाज के प्रति उनके कर्तव्यों की समझ पर विशेष ध्यान दिया जाता था। यह शिक्षा प्रणाली मौखिक परंपरा, प्रत्यक्ष अनुभव और गुरु–शिष्य संबंध पर आधारित थी, जहाँ हर छात्र की व्यक्तिगत क्षमता और रुचियों पर गौर किया जाता था।

आधुनिक युग में, शिक्षा के उद्देश्य, तरीके और संरचना में बड़े बदलाव आए हैं। वैश्वीकरण, तकनीकी प्रगति और बदलते सामाजिक–आर्थिक परिदृश्य ने शिक्षा प्रणाली के सामने नई चुनौतियाँ खड़ी कर दी हैं। इन चुनौतियों से निपटने और 21वीं सदी की जरूरतों के हिसाब से एक समावेशी, गुणवत्तापूर्ण और नवाचार–उन्मुख शिक्षा प्रणाली स्थापित करने के लिए भारत सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की शुरुआत की। यह नीति भारतीय शिक्षा के इतिहास में एक महत्वपूर्ण कदम है, जो कई बुनियादी बदलावों का प्रस्ताव करती है, जिनमें बहु–विषयक शिक्षा, अनुभवात्मक अधिगम, महत्वपूर्ण सोच का विकास, कौशल–आधारित शिक्षा और भारतीय ज्ञान परंपराओं के पुनरुत्थान पर जोर शामिल है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली को आधुनिक बनाने और उसे वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने का लक्ष्य रखती है। इस नीति में भारतीय भाषाओं, कलाओं और ज्ञान परंपराओं को बढ़ावा देने पर भी बल दिया गया है। ऐसे

में यह सवाल स्वाभाविक रूप से उठता है कि क्या हमारी प्राचीन वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली के कुछ सिद्धांत और अभ्यास आज भी प्रासंगिक हो सकते हैं? क्या राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, जो भविष्य की ओर देखते हुए अपनी जड़ों से जुड़ने की बात करती है, वैदिक शिक्षा के उन तत्वों से प्रेरणा ले सकती है जो छात्रों के चरित्र निर्माण, नैतिक विकास और समग्र कल्याण पर जोर देते थे?

मेरे इस शोध में यह जानने की कोशिश की जाएगी कि वैदिक कालीन शिक्षा की कौन–सी खास विशेषताएँ, जैसे कि व्यक्तिगत ध्यान, प्रकृति से जुड़ाव, नैतिक मूल्यों का समावेश, अनुभवात्मक अधिगम और गुरु–शिष्य परंपरा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सिद्धांतों और उद्देश्यों के साथ किस तरह मेल खाती हैं। इसके अलावा, यह शोध इन प्राचीन पद्धतियों को आधुनिक शिक्षा प्रणाली में एकीकृत करने की संभावनाओं और चुनौतियों का भी समालोचनात्मक विश्लेषण करेगा। यह अध्ययन भारतीय शिक्षा के भविष्य के लिए एक संतुलित और समग्र दृष्टिकोण विकसित करने में मदद करेगा, जो हमारी जड़ों से जुड़ा हो और भविष्य की आकांक्षाओं को पूरा करने में सक्षम हो।

शोध समस्या चयन का औचित्य

वर्तमान शोध ''राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिपेक्ष्य में वैदिक कालीन शिक्षा की प्रासंगिकता का समालोचनात्मक अध्ययन'' नामक विषय पर केंद्रित है। इस शोध समस्या का चयन कई महत्वपूर्ण कारणों से उचित एवं आवश्यक है, जिनका विस्तृत विवरण निम्नलिखित है–

1. नीतिगत प्रासंगिकता और तात्कालिकता

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत की शिक्षा प्रणाली में एक युगांतरकारी परिवर्तन लाने का लक्ष्य रखती है। यह नीति भविष्योन्मुखी होने के साथ–साथ भारतीय ज्ञान परंपराओं, मूल्यों और संस्कृति को पुनः स्थापित करने पर भी विशेष बल देती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का यह दृष्टिकोण, जो अपनी जड़ों से जुड़ने और वैश्विक चुनौतियों का सामना करने की बात करता है, सीधे तौर पर वैदिक कालीन शिक्षा के सिद्धांतों की प्रासंगिकता की खोज को आवश्यक बनाता है।

नीति में बहु–विषयक शिक्षा, अनुभवात्मक अधिगम, समग्र विकास, नैतिक मूल्यों का समावेश और भारतीय भाषाओं के संरक्षण जैसे प्रावधान स्पष्ट रूप से वैदिक शिक्षा के कई पहलुओं से मेल खाते हैं। ऐसे में, यह शोध राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों को समझने और उनके प्रभावी कार्यान्वयन के लिए प्राचीन भारतीय ज्ञान से संभावित प्रेरणा स्रोतों की पहचान करने में मदद करेगा। यह अध्ययन नीति निर्माताओं और शिक्षाविदों को एक सूचित परिप्रेक्ष्य प्रदान करेगा कि कैसे प्राचीन और आधुनिक शिक्षा प्रणालियों के बीच सामंजस्य स्थापित किया जा सकता है।

2. ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व

भारतीय शिक्षा का इतिहास वैदिक काल से प्रारंभ होता है, जिसने न केवल ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों को विकसित किया बल्कि चरित्र निर्माण और नैतिक मूल्यों को भी शिक्षा का अभिन्न अंग बनाया। वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली में गुरु–शिष्य परंपरा, व्यक्तिगत ध्यान, प्रकृति से जुड़ाव और समग्र जीवन–दृष्टि का गहरा प्रभाव था। आज जब शिक्षा को अक्सर केवल आर्थिक लाभ से जोड़कर देखा जाता है, तब वैदिक शिक्षा के ये पहलू हमें एक अधिक संतुलित और मानवीय दृष्टिकोण प्रदान कर सकते हैं। इस शोध के माध्यम से हम अपनी समृद्ध शैक्षिक विरासत को पुनर्जीवित करने और उसके उन तत्वों को समझने का प्रयास करेंगे जो आज भी भारतीय पहचान और मूल्यों के लिए महत्वपूर्ण हैं। यह अध्ययन सांस्कृतिक पुनर्जागरण के संदर्भ में वैदिक शिक्षा की भूमिका को समझने में सहायक होगा।

3. शैक्षिक चुनौतियों का समाधान

आधुनिक शिक्षा प्रणाली कई चुनौतियों का सामना कर रही है, जिनमें रटंत विद्या पर अत्यधिक जोर, नैतिक शिक्षा का अभाव, छात्रों में तनाव, कौशल अंतराल और समग्र व्यक्तित्व विकास की कमी शामिल है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इन चुनौतियों को संबोधित करने का प्रयास करती है। वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली में इन समस्याओं के संभावित समाधान निहित हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, वैदिक शिक्षा का अनुभवात्मक अधिगम और प्रत्यक्ष ज्ञान पर जोर वर्तमान में आवश्यक कौशल–आधारित और अनुभवात्मक शिक्षा के अनुरूप है। इसी प्रकार, नैतिक और

आध्यात्मिक विकास पर वैदिक शिक्षा का बल छात्रों के समग्र कल्याण और मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा दे सकता है। यह शोध इन प्राचीन समाधानों की व्यवहार्यता और उन्हें आधुनिक संदर्भ में लागू करने की संभावनाओं का विश्लेषण करेगा, जिससे वर्तमान शैक्षिक समस्याओं का समाधान खोजने में मदद मिलेगी।

4. समालोचनात्मक विश्लेषण की आवश्यकता

किसी भी प्राचीन प्रणाली को आँख मूंदकर स्वीकार करना उचित नहीं है। वैदिक कालीन शिक्षा के जहां अनेक गुण थे, वहीं उसकी अपनी सीमाएँ भी थीं, जैसे कि सामाजिक–आर्थिक असमानताएँ और कुछ वर्गों तक शिक्षा की सीमित पहुंच। इस शोध का उद्देश्य केवल वैदिक शिक्षा की प्रशंसा करना नहीं, बल्कि उसका समालोचनात्मक अध्ययन करना है। इसका अर्थ है कि इसके सकारात्मक पहलुओं को उजागर करना और साथ ही इसकी सीमाओं और चुनौतियों को स्वीकार करना। यह दृष्टिकोण हमें प्राचीन ज्ञान से सीखते हुए एक अधिक समावेशी और न्यायसंगत शिक्षा प्रणाली का निर्माण करने में मदद करेगा, जो आधुनिक समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप हो। यह शोध हमें यह समझने में मदद करेगा कि वैदिक शिक्षा के कौन से तत्व वास्तव में आज के लिए प्रासंगिक हैं और किन्हें परिवर्तित या परिष्कृत करने की आवश्यकता है।

इन सभी कारणों से, ''राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिपेक्ष्य में वैदिक कालीन शिक्षा की प्रासंगिकता का समालोचनात्मक अध्ययन'' एक अत्यधिक प्रासंगिक, समयोचित और महत्वपूर्ण शोध विषय है। यह न केवल अकादमिक रूप से मूल्यवान होगा, बल्कि भारतीय शिक्षा के भविष्य के लिए नीतिगत और व्यावहारिक अंतर्दृष्टि भी प्रदान करेगा।

शोध कथन

"राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिपेक्ष में वैदिक कालीन शिक्षा की प्रासंगिकता का समालोचनात्मक अध्ययन"

शोध में प्रयुक्त शब्दों की परिभाषा

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020— राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत सरकार द्वारा जुलाई 2020 में घोषित एक बड़ी और दूरदर्शी नीति है। इसका लक्ष्य भारत की शिक्षा व्यवस्था को संपूर्ण, लचीला, कई विषयों वाला, अच्छी गुणवत्ता वाला और 21वीं सदी की जरूरतों के मुताबिक बनाना है। यह नीति स्कूल की पढ़ाई से लेकर उच्च शिक्षा तक सभी स्तरों पर महत्वपूर्ण बदलाव सुझाती है। इसमें अनुभव से सीखना, गहरी सोच विकसित करना, कौशल बढ़ाना, भारतीय ज्ञान परंपराओं को बढ़ावा देना और तकनीक का इस्तेमाल करना शामिल है। इसका उद्देश्य भारत को एक ज्ञान की शक्ति बनाना और विद्यार्थियों के पूरे विकास को सुनिश्चित करना है।

2. परिपेक्ष्य— ''परिपेक्ष्य'' का मतलब है किसी बात या विचार को देखने का खास नजरिया या संदर्भ। इस शोध के संदर्भ में, इसका मतलब है कि वैदिक कालीन शिक्षा की उपयोगिता का अध्ययन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सिद्धांतों, उद्देश्यों और प्रावधानों के हिसाब से किया जाएगा। यानी, हम देखेंगे कि नई शिक्षा नीति क्या कहती है और फिर उस नीति के संदर्भ में वैदिक शिक्षा के कौन से तत्व आज भी काम के हो सकते हैं।

3. वैदिक कालीन शिक्षा— वैदिक कालीन शिक्षा से मतलब प्राचीन भारत में लगभग 1500 ईसा पूर्व से 600 ईसा पूर्व के दौरान विकसित और प्रचलित शिक्षा प्रणाली से है। यह शिक्षा मुख्य रूप से वेदों, उपनिषदों और अन्य धार्मिक तथा दार्शनिक ग्रंथों पर आधारित थी। इसकी खासियत गुरुकुल प्रणाली, गुरु–शिष्य परंपरा, मौखिक शिक्षा, प्रकृति से जुड़ाव, नैतिक और आध्यात्मिक विकास पर जोर, तथा विद्यार्थियों के संपूर्ण विकास (शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक) पर बल देना था। इसका उद्देश्य केवल ज्ञान देना नहीं, बल्कि एक आदर्श और धर्मपरायण नागरिक बनाना था।

4. प्रासंगिकता— ''प्रासंगिकता'' का मतलब है किसी चीज का मौजूदा स्थिति या संदर्भ में उपयोगी, अर्थपूर्ण या सही होना। इस शोध में, यह शब्द यह जानने के लिए इस्तेमाल किया गया है कि वैदिक कालीन शिक्षा के सिद्धांत, मूल्य, पढ़ाने के

तरीके और संपूर्ण नजरिया आज 21वीं सदी की शिक्षा व्यवस्था, खासकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लक्ष्यों को पाने में कितने उपयोगी या लागू करने लायक हो सकते हैं। यह सिर्फ इतिहास की बात नहीं है, बल्कि आज की समस्याओं के लिए पुराने समाधानों को खोजना है।

5. समालोचनात्मक अध्ययन— ''समालोचनात्मक अध्ययन'' का मतलब है किसी विषय का गहराई से, विस्तार से और निष्पक्ष होकर विश्लेषण करना, जिसमें उसके अच्छे और बुरे दोनों पहलुओं पर विचार किया जाता है। इसमें किसी भी चीज को बिना सोचे—समझे स्वीकार करने के बजाय, उसके गुणों, कमियों, सीमाओं, प्रभावों और नतीजों का तर्क के आधार पर मूल्यांकन किया जाता है। इस शोध के संदर्भ में, इसका मतलब है कि वैदिक कालीन शिक्षा के केवल अच्छे पहलुओं को ही नहीं देखा जाएगा, बल्कि उसकी कमी, उस समय की सामाजिक—सांस्कृतिक सीमाओं (जैसे सभी को शिक्षा न मिल पाना) और आज के संदर्भ में उसकी चुनौतियों का भी विश्लेषण किया जाएगा। इसका मकसद एक संतुलित और सही निष्कर्ष पर पहुंचना है कि वैदिक शिक्षा के किन तत्वों को आधुनिक शिक्षा में प्रभावी ढंग से शामिल किया जा सकता है और किन को नहीं।

शोध की आवश्यकता और महत्व

यह शोध, कई महत्वपूर्ण कारणों से आवश्यक और महत्वपूर्ण है। सबसे पहले, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) भारत की शिक्षा प्रणाली में एक बड़ा बदलाव लाने का प्रयास कर रही है। यह नीति केवल अकादमिक ज्ञान पर ध्यान नहीं देती, बल्कि भारतीय ज्ञान परंपराओं, मूल्यों और संस्कृति को शिक्षा का एक अहम हिस्सा बनाने पर भी खास जोर देती है। इस संदर्भ में, वैदिक कालीन शिक्षा का अध्ययन बेहद जरूरी हो जाता है, क्योंकि यह शोध राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बहु—विषयक दृष्टिकोण, अनुभव से सीखने, पूरे व्यक्तित्व के विकास और नैतिक मूल्यों को शामिल करने जैसे प्रमुख सिद्धांतों को समझने और उन्हें प्रभावी ढंग से लागू करने में मदद करेगा। यह बताएगा कि प्राचीन भारतीय शैक्षिक दर्शन कैसे वर्तमान नीति के लक्ष्यों को पाने में सहायक हो सकता है, जिससे नीति निर्माताओं

और शिक्षाविदों को एक ठोस आधार मिलेगा।

दूसरे, भारत की एक समृद्ध और प्राचीन शैक्षिक विरासत रही है, जिसकी जड़ें वैदिक काल में हैं। आधुनिक शिक्षा प्रणाली अक्सर पश्चिमी विचारों से प्रभावित रही है, जिससे हमारी अपनी परंपराओं और तरीकों पर कम ध्यान दिया गया है। यह शोध वैदिक कालीन शिक्षा की गहराइयों और बारीकियों को फिर से सामने लाएगा। यह समझने में मदद करेगा कि कैसे उस समय की शिक्षा प्रणाली ने ज्ञान के साथ–साथ चरित्र निर्माण, नैतिक विकास और सामाजिक जिम्मेदारियों पर भी जोर दिया। आज जब हम ऐसी शिक्षा चाहते हैं जो छात्रों को सिर्फ जानकारी न दे, बल्कि उन्हें जिम्मेदार और मूल्य–आधारित नागरिक बनाए, तब वैदिक शिक्षा के ये पहलू बहुत प्रासंगिक हो जाते हैं। यह अध्ययन हमें अपनी जड़ों से जुड़ने और अपनी सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करने में सहायक होगा।

तीसरे, आज की शिक्षा प्रणाली कई चुनौतियों का सामना कर रही है, जैसे कि रटने पर जोर, छात्रों में तनाव, नैतिक मूल्यों का कम होना, कौशल की कमी और समाज से कटाव महसूस करना। वैदिक कालीन शिक्षा में इन समस्याओं के संभावित समाधान छिपे हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, वैदिक शिक्षा का गुरु–शिष्य संबंध, व्यक्तिगत ध्यान और प्रकृति से जुड़ाव छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य और संपूर्ण कल्याण को बढ़ावा दे सकता है। इसी तरह, अनुभव से सीखने और आत्मनिर्भरता पर उसका जोर आधुनिक कौशल विकास की जरूरतों को पूरा कर सकता है। यह शोध इन प्राचीन तरीकों की व्यावहारिकता का विश्लेषण करेगा और देखेगा कि उन्हें आधुनिक शिक्षा प्रणाली में कैसे शामिल किया जा सकता है ताकि वर्तमान चुनौतियों का बेहतर समाधान मिल सके।

अंत में, किसी भी प्राचीन प्रणाली को वर्तमान संदर्भ में लागू करने से पहले उसका गहराई से विश्लेषण जरूरी है। वैदिक शिक्षा के कई फायदे थे, लेकिन उसकी अपनी सीमाएँ भी थीं, जैसे कि सामाजिक असमानताएँ और कुछ वर्गों तक शिक्षा की सीमित पहुंच। यह शोध केवल वैदिक शिक्षा की तारीफ नहीं करेगा, बल्कि उसकी कमियों और आज के समाज में उसकी अनुपयुक्तता के पहलुओं पर

भी विचार करेगा। यह हमें एक संतुलित और सही नजरिया अपनाने में मदद करेगा, जिससे हम प्राचीन ज्ञान के उन तत्वों को पहचान सकें जो वास्तव में आज के लिए प्रासंगिक और समावेशी हैं। यह अध्ययन हमें यह समझने में मदद करेगा कि हम अपनी विरासत से क्या सीख सकते हैं और उसे 21वीं सदी की जरूरतों के हिसाब से कैसे ढाल सकते हैं। कुल मिलाकर, यह शोध न केवल अकादमिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि भारत के शैक्षिक भविष्य के लिए भी अत्यंत आवश्यक और प्रासंगिक है, क्योंकि यह एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की नींव रखने में मदद करेगा जो अपनी जड़ों पर गर्व करती हो और भविष्य के लिए तैयार हो।

शोध के उद्देश्य

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मूल में परिलक्षित शैक्षिक अवधारणाओं का अध्ययन।
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति2020 में उल्लेखित शैक्षिक मिशन विजन प्रारूप का विवरणात्मक अध्ययन।
3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा संदर्भित स्कूली शिक्षा के स्वरूप का अध्ययन।
4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा संस्तुत शिक्षण अधिगम व्यवस्था की विधियों का अध्ययन करना।
5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में अभि लिखित गुरु शिष्य संबंधों का अध्ययन करना।
6. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रदत्त अधिगम प्रतिफलों के मूल्यांकन का अध्ययन करना।

6\. वैदिक कालीन शिक्षा के विभिन्न स्तरों के लिए उल्लेखित शिक्षा व्यवस्था का अध्ययन करना।

7\. शिक्षा नीति 2020 में प्रतिबिंबित व्यवस्थाओं का वैदिक कालीन शिक्षा व्यवस्था के मध्य समाज का समीक्षात्मक अध्ययन।

8. प्रमुख शिक्षा आयोग और राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों एवं समितियों का अध्ययन करना।

9. वैदिक काल में स्त्री शिक्षा एवं सह शिक्षा के विकास तथा समाज पर इसके प्रभाव का अध्ययन करना।

10. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिपेक्ष में वैदिक कालीन शिक्षा की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

साहित्य समीक्षा

भावेश कुमार 2011 [1] लेखक के अनुसार मेरे शोध को वैदिक शिक्षा के मूलभूत सिद्धांतों और उसके समग्र दृष्टिकोण को समझने में मदद मिलती है, जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिपेक्ष्य में वैदिक कालीन शिक्षा की प्रासंगिकता का समालोचनात्मक अध्ययन 2020 के बहु–विषयक और समग्र शिक्षा के उद्देश्यों से मिलते–जुलते हैं। हालाँकि, यह पुस्तक सीधे तौर पर आधुनिक शिक्षा नीति से वैदिक शिक्षा की तुलना या समालोचना नहीं करती।

तोमर, एल आर 2014 [2] मेरे शोध के लिए, यह पुस्तक वैदिक शिक्षा के सांस्कृतिक और दार्शनिक आधार को समझने में महत्वपूर्ण है, जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिपेक्ष्य में वैदिक कालीन शिक्षा की प्रासंगिकता का समालोचनात्मक अध्ययन2020 में भारतीय मूल्यों और ज्ञान को बढ़ावा देने के आग्रह से जुड़ा है। यह पुस्तक एक व्यापक सांस्कृतिक संदर्भ प्रदान करती है, लेकिन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिपेक्ष्य में वैदिक कालीन शिक्षा की प्रासंगिकता का समालोचनात्मक अध्ययन 2020 के विशिष्ट प्रावधानों से वैदिक शिक्षा की तुलना पर केंद्रित नहीं है

चंदन श्रीवास्तव 2021 [3] लेखक के अनुसार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिपेक्ष्य में वैदिक कालीन शिक्षा की प्रासंगिकता का समालोचनात्मक अध्ययन 2020 की व्यावहारिक चुनौतियों और उसके वास्तविक उद्देश्यों को समझने में सहायता करती है, जिससे मैं वैदिक शिक्षा की प्रासंगिकता का आकलन अधिक यथार्थवादी ढंग से कर सकूँ। यह पुस्तक नीति के कार्यान्वयन पक्ष पर अधिक केंद्रित है, न कि उसके प्राचीन भारतीय ज्ञान से संबंध पर।

महेश नारायण मठ 2021 [4] मेरे शोध के संदर्भ में, यह पुस्तक महत्वपूर्ण है क्योंकि यह बहु–विषयक शिक्षा के आधुनिक विचारों को समझने में मदद करता है, और इसकी तुलना वैदिक शिक्षा के उस पहलू से की जा सकती है जहाँ ज्ञान को समग्रता में देखा जाता था (जैसे वेद, उपनिषद में विज्ञान, कला, दर्शन, जीवन–शैली का संगम)। यह पत्र नीति के इस विशिष्ट पहलू पर केंद्रित है, जिससे वैदिक शिक्षा के ष्समग्र ज्ञानष के साथ इसकी समानता का पता लगाने में सहायता मिलती है।

शर्मा आर एस 2018 [5] इस पुस्तक से मेरे शोध को वैदिक और आधुनिक शिक्षा के मूल सिद्धांतों को समझने में मदद मिलती है, जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में उनकी प्रासंगिकता का आकलन करने के लिए आवश्यक है। यह पुस्तक एक सामान्य तुलना प्रदान करती है, लेकिन विशेष रूप से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के ढांचे के भीतर वैदिक शिक्षा की प्रासंगिकता पर गहराई से नहीं जाती।

खरे डी एम 2021 [6] मेरे शोध के लिए, यह पुस्तक विशेष रूप से प्रासंगिक है क्योंकि यह सीधे तौर पर वैदिक मूल्यों और आधुनिक शिक्षा के बीच संबंध स्थापित करता है, और NEP 2020 के मूल्य–आधारित शिक्षा के उद्देश्य के साथ वैदिक शिक्षा की प्रासंगिकता को जोड़ता है। यह नैतिक पहलू पर अधिक केंद्रित है।

श्याम सुंदर पाल 2017 [7] मेरे शोध के लिए, यह पुस्तक एक सीधा लिंक स्थापित करती है कि कैसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 वास्तव में प्राचीन भारतीय ज्ञान को शामिल करने का इरादा रखती है। यह मुझे वैदिक शिक्षा (जो भारतीय ज्ञान प्रणाली का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है) की विशिष्ट प्रासंगिकता का विश्लेषण करने में मदद करती है कि इसे नीति के तहत कैसे प्रभावी ढंग से लागू किया जा सकता है।

दीपक आर्य 2021 [8] यह पुस्तक मेरे अध्ययन के लिए बहुत प्रासंगिक है क्योंकि यह सीधे तौर पर वैदिक शिक्षा के एक प्रमुख मॉडल (गुरुकुल) को आधुनिक

नीति के साथ जोड़ता है और इसकी व्यावहारिक प्रासंगिकता का समालोचनात्मक मूल्यांकन करता है। यह मुझे यह समझने में मदद करता है कि प्राचीन शिक्षण पद्धतियों को वर्तमान शैक्षणिक ढांचे में कैसे लागू किया जा सकता है।

शोध विधि

यह शोध सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करेगा, जिसमें मुख्य रूप से मात्रात्मक शोध उपागम अपनाया जाएगा। 'हाँ'/'ना' उत्तर वाले प्रश्नों के कारण, शोध का मुख्य ध्यान आवृत्ति, प्रतिशत और पैटर्न की पहचान पर होगा।

उपकरण

शोध का प्राथमिक उपकरण एक संरचित प्रश्नावली होगी। यह प्रश्नावली केवल 'हाँ' या 'ना' उत्तर वाले प्रश्नों से मिलकर बनी होगी, जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के विभिन्न पहलुओं और वैदिक कालीन शिक्षा की प्रासंगिकता से संबंधित होंगे।

प्रक्रिया

प्रश्नावली का निर्माण– राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों और वैदिक कालीन शिक्षा के सिद्धांतों के आधार पर 'हाँ'/'ना' प्रारूप में एक विस्तृत प्रश्नावली तैयार की जाएगी। प्रत्येक प्रश्न को इस प्रकार संरचित किया जाएगा कि उत्तर सीधे एक (हाँ/ना) प्रतिक्रिया में दर्ज किया जा सके।

न्यादर्श का चयन– प्रासंगिक हितधारकों (जैसे शिक्षाविद्, शिक्षक, शोधार्थी, नीति निर्माता और संभवतः ऐसे व्यक्ति जो वैदिक शिक्षा के जानकार हैं) में से उपयुक्त न्यादर्श का चयन किया जाएगा।

आँकड़ा संग्रह– चयनित न्यादर्श से प्रश्नावली के माध्यम से आँकड़ों का संग्रह किया जाएगा। यह ऑनलाइन या ऑफलाइन माध्यम से किया जा सकता है।

आँकड़ा विश्लेषण– 'हाँ'/'ना' उत्तर वाले प्रश्नों से प्राप्त आँकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण किया जाएगा। इसमें मुख्य रूप से आवृत्ति वितरण और प्रतिशत की गणना शामिल होगी। विभिन्न प्रश्नों पर 'हाँ' और 'ना' प्रतिक्रियाओं के अनुपात का

विश्लेषण करके रुझानों और पैटर्न की पहचान की जाएगी। यह विश्लेषण वैदिक कालीन शिक्षा के विभिन्न पहलुओं की प्रासंगिकता के संबंध में लक्षित समूह के विचारों की मात्रात्मक तस्वीर प्रस्तुत करेगा।

शोध परिसीमन

प्रस्तावित शोध राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिपेक्ष में वैदिक कालीन शिक्षा की प्रासंगिकता का विश्लेषण तक सीमित रहेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1] भवेश कुमार (2011). आधुनिक संदर्भ में प्राचीन भारतीय शिक्षा दर्शन। भारतीय आधुनिक शिक्षा, 32 (02), 75–85.

[2] तोमर, एलआर (2014)। भारतीय शिक्षा के मूल तत्व। सुरुचि प्रकाशन.

[3] चन्दन श्रीवास्तव (2021). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के दृष्टिकोण से भारत में उच्चतर शिक्षा का विकास. भारतीय आधुनिक शिक्षा, 42(02), 82–88.

[4] महेश नारायण मठ (2021)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षक शिक्षा आवश्यकताएँ, चुनौतियाँ एवं समाधान। भारतीय आधुनिक शिक्षा, 41 (03), 7–18.

[5] शर्मा, आरएस (2018)। भारत का प्राचीन इतिहास। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

[6] खरे, डीएम, और वर्मा, डीबी (संस्करण)। (2021)। भारत में शिक्षा–नेति की दशा एवं दिशा। श्री विनायक प्रकाशन.

[7] श्याम सुन्दर पाल (2017). मानव जीवन में योग का महत्व. International Journal of Advances in Social Sciences, 5(1), 29–32.

[8] दीपक आर्य (2021)। वैदिक काल गुरुकुल शिक्षा प्रणाली। साहित्य संहिता (साहित्य संहिता), 7 (11), 9–16.